वन महोत्सव विशेषांक

वानिकी समाचार

वन विभाग राजस्थान का मासिक पत्र

वर्ष : 26 अंक : 8 अगस्त-2009

समझना होगा

हरित राजस्थान कार्यक्रम की भावना को

❐ अभिजीत घोष

हरित राजस्थान की संकल्पना केवल पौधे रोपित करने मात्र के ही कार्यक्रम की नहीं है बल्कि राज्य में वन, पर्यावरण तथा जल संरक्षण उपायों की यह एक दीर्घकालीन रणनीति है, जिसको सभी प्रकृति प्रेमियों, विशेषकर सरकारी अधिकारियों एवं नरेगा से जुड़े प्रशासनिक अधिकारियों को सही परिप्रेक्ष्य में समझना जरूरी है।

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा प्रदेश को खुशहाल बनाने की अपनी योजनाओं में हरित राजस्थान कार्यक्रम को एक मुख्य संकल्पना के रूप में प्रस्तुत किया गया है । जिसका औपचारिक शुभारम्भ 18 जून, 09 को शिक्षा संकुल, जयपुर तथा 18 जुलाई, 09 को संपूर्ण प्रदेश में एक साथ वन महोत्सवों का आयोजन कर किया गया है।

प्रायः हम देखते हैं कि बड़े पौधे लगाने के कुछ समय बाद ही वे मुरझा जाते हैं, सूख जाते हैं या कुछ समय बाद मर जाते हैं। अतः हमें सबसे पहले यह समझना होगा कि किसी भी स्थान पर पौधे रोपित करना तो आसान कार्य है लेकिन उसे पालपोस कर वृक्ष बनाना बहुत कठिन कार्य है।

पौधा लगाना, वास्तव में एक तकनीकी कार्य है जिसमें सही लम्बाई-चौड़ाई का गड्ढ़ा बनाना, कीटनाशक-दीमक रोधी दवा डालना, पर्याप्त खाद, मिट्टी का मिश्रण बनाना, सही लम्बाई के पौधे लगाना, पौधे के रोपण के समय मिट्टी पिण्ड का नहीं टूटना तथा स्थानीय प्रजातियों का चयन आदि प्राथमिक उपाय है जिन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये।

हरित राजस्थान अभियान के दौरान नरेगा योजना के अन्तर्गत बड़ी संख्या में पौधे खरीदे गये हैं और एक-दूसरे से बढ़कर पौधारोपण किया जा रहा है। लेकिन हमें यह समझना होगा कि यह कोई प्रतिस्पर्धा का कार्य नहीं है। यह कार्य स्थान की उपलब्धता, सुरक्षा, बाडबंदी की व्यवस्था, वर्षा की स्थिति, सिंचाई की व्यवस्था आदि बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिये।

जुलाई-अगस्त माह में वर्षा बहुत ही कम हुई है। अतः जहाँ-जहाँ वर्षा कम है, वहाँ-वहाँ कम संख्या में पौधे लगाना ही उचित होगा, ताकि उनकी सिंचाई एवं देखभाल भलीभांति हो सके। बाकी पौधों को स्थानीय पौधशालाओं में संरक्षित रखना चाहिये ताकि उन्हें आगामी अनुकूल समय में रोपित किया जा सके। लम्बे समय तक पौधों का रखरखाव करना भी एक तकनीकी कार्य है।

चूंकि पेड़-पौधे पर्यावरण सुधार का एक बड़ा कारक हैं। अतः यदि ज्यादा संख्या में रोपण किया जाना हो तो समूह क्लस्टर में किया जावे ताकि वे एक उप वन जैसा बना सके जो स्थानीय वातावरण को शुद्ध, प्रदूषण मुक्त तथा वन जैसी भूमिका निभा सके। एक ही स्थान पर बड़ी भूमि पर किया गया

सम्पादकीय...

हरित राजस्थान पर पानी का संकट

इस मानसून में वर्षा का अभाव रहने के कारण राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के 26 जिलों में सूखा घोषित किया गया है। विगत् 30 वर्षों में यह तीसरा सबसे बड़ा सूखा है। इससे न केवल कृषि, सिंचाई कार्यों एवं पेयजल के लिए जल संकट उत्पन्न हो गया है बल्कि हरित राजस्थान कार्यक्रम के अन्तर्गत किये गये पौधारोपणों पर भी दुष्प्रभाव पड़ने की आशंका व्यक्त की गई है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार हरित राजस्थान अभियान के अन्तर्गत जुलाई-अगस्त में एक करोड़ से अधिक पौधे पूरे प्रदेश में लगाये गये हैं। जिनको जीवित रखने के लिए बहुत पानी की आवश्यकता होगी। यद्यपि लगाये गये पौधों की सिंचाई हेतु पानी की आपूर्ति टेकरों द्वारा की जा सकती है। लेकिन वर्षा तथा जल आपूर्ति की कमी से इतनी अधिक मात्रा में पानी मिलना काफी मुश्किल लगता है एवं पौधे लगाने के अभियान पर थोड़ा बहुत असर अवश्य ही पड़ेगा।

अतः ऐसी स्थिति में हरित राजस्थान कार्यक्रम से जुड़े सरपंचों, जिला परिषदों, जिला कलेक्टरों तथा वनाधिकारियों तथा पर्यावरण प्रेमियों को विचार करना होगा कि पौधे लगाने के स्थान की क्या प्राथमिकताऐं हों। सार्वजनिक, सुनसान तथा बस्ती से दूर पौधे तब ही लगाये जाने चाहिये, जहाँ पानी की नियमित आपूर्ति की व्यवस्था हो, अन्यथा इस वर्ष पौधे नहीं लगाने चाहिये। अभियान में ज्यादा प्राथमिकता में घरों के आगे कॉलोनियों में, मंदिरों, स्कूलों तथा कॉलेज परिसरों में पौधे लगाये जाने चाहिये और स्थानीय समुदाय की जिम्मेदारी सुनिश्चित की जानी चाहिये।

हमारा प्रयास यही होना चाहिये कि वर्षाकाल में भले ही कम संख्या में पौधे लगें, लेकिन जो भी लगें वह वृक्ष बनें। अगले वर्ष फिर बड़े पौधे लगाने को मिल जायेंगे और तब ही यह अभियान सतत रूप से जारी रह सकेगा।

पौधारोपण ज्यादा सार्थक प्रयास माना जाता है क्योंकि उस वृक्षारोपण स्थल की सुरक्षा एवं सिंचाई कम संसाधनों से भी हो सकती है और पौधारोपण का प्रभाव भी दृष्टिगत होता है।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा हरित राजस्थान कार्यक्रम में जिला प्रशासन से लेकर ग्राम पंचायत की सक्रिय सहभागिता बनाने के पीछे एक महान उद्देश्य भी छिपा हुआ है। वह है जल-संरक्षण का। इसी उद्देश्य के पूर्ति हेतु, ग्राम्यवनों, परिभ्राषित वन क्षेत्रों, अरावली पर्वत श्रृंखलाओं, जल ग्रहण क्षेत्रों, बांधों के जल प्रवाह क्षेत्रों में तथा जल भराव स्थानों का चयन कर सघन पौधारोपण किया जाना चाहिए ताकि कालान्तर में वर्षा जल के साथ बहने वाली मिट्टी कटान की रोकथाम हो एवं जल भराव क्षमता में वृद्धि हो सके।

ग्राम पंचायतों, नगरपालिकाओं तथा क्रियान्वयन एजेंसी को यथासंभव वन क्षेत्रों में प्राथमिकता से पौधारोपण कर जल एवं मृदा संरक्षण के कार्य कराने चाहिये। विशाल हरे-भरे वन क्षेत्र, सतही एवं भूमिगत जल भण्डारों की वृद्धि के प्रमुख स्रोत है। इनसे भूमि कटान रूकता है, वर्षा जल के साथ बहने वाली मिट्टी रूकती है। साथ, ही विशाल वन क्षेत्रों से भूमि के अन्दर पानी भी जाता है। हमारे प्रदेश में बहुत अधिक वन भूमि ऐसी उपलब्ध है जिस पर आगामी वर्षों में लगातार पौधारोपण कर उजड़े-वीरान हुए प्राकृतिक वनों का पुर्नरूद्धार किया जा सकता है। हरियाली से आच्छादित क्षेत्र जल संरक्षण करने में बहुत कारगर होते हैं।

दूसरा, सिंचाई एवं जल परियोजनाओं के चारों ओर उपलब्ध स्थानों को भी हरा-भरा करने को प्राथमिकता देनी होगी। इसमें ऐसी प्रजातियों का चयन करें जो स्थानीय जलवायु दशाओं में प्राकृतिक रूप से उग सकें और फलों का लाभ भी स्थानीय समुदाय को मिल सके। ऐसे वृक्षारोपणों की जिम्मेदारी स्थानीय समुदाय पर ही छोड़ी जावे ताकि उनको आर्थिक लाभ मिलता रहे और उन वृक्षारोपण के प्रति अपनेपन का भाव सदैव बना रह सके।

वस्तुतः नरेगा से इस कार्यक्रम को जोड़ने के पीछे मुख्यमंत्री जी की मंशा यह भी रही है कि इससे आमजन जुड़े, इसे केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं समझे, बल्कि अपने गाँव-देहात में जल संरक्षण, पर्यावरण सुधार हरा-भरा स्वच्छ अधिवास बनाने का उपक्रम बनाये। बागवानी, कृषि वानिकी तथा फल उत्पादन को जोड़ना इसके दूसरे आयाम हो सकते हैं, जिनके बारे में विशेषज्ञों को सोचना होगा। सबके सामूहिक प्रयासों से राजस्थान हरा-भरा होकर जल संरक्षण की भावना को कालान्तर में फलीभूत कर सकेगा।

राज्य स्तरीय वन महोत्सव काआयोजन

इस वर्ष 60वें वन महोत्सव का आयोजन, एक साथ दिनांक 19 जुलाई को प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर किया गया जबकि राज्य स्तरीय वन महोत्सव जयपुर जिले की तहसील चौमू के ग्राम ढाणी बाढावाली में मनाया गया।

यह समारोह ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग एवं वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। समारोह स्थल पर लगभग 200 पौधे रोपित किये गये जिनमें मुख्य रूप से नीम, शीशम, अरडू, बड़, पीपल, खैर आदि प्रजातियाँ रोपित की गई।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने वट का पौधा रोपित कर वन महोत्सव का औपचारिक शुभारम्भ किया। वन महोत्सव स्थल की 25 हैक्टर पंचायती चारागाह भूमि पर राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना के अन्तर्गत 15 लाख रुपये व्यय कर ग्राम्य वन बनाया जावेगा।

इस अवसर पर अपने सम्बोधन में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा है कि जीवन में जितनी आवश्यकता शिक्षा की है, उससे कहीं अधिक आवश्यकता पेड़-पौधे लगाने-संवारने की भी है। लोगों को दोनों के महत्व को समझना चाहिए। लोग शिक्षा के महत्व को समझते हैं, लेकिन अब समय आ गया है कि वे भावी पीढ़ी की खातिर वृक्षारोपण के महत्व को भी समझें।

इस मौके पर मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता गहलोत ने भी पौधा लगाया। यहां एक विशेष बात यह रही कि ढाणियों और आसपास के गांव के दम्पतियों ने मिलकर वृक्ष लगाए। इस ढाणी में 20 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने क्षेत्रीय मांगों पर ढोढ़सर से सिंगोदकला से बाढ़ावाली ढ़ाणी तक की सड़क बनाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान पीढ़ी का कर्तव्य बनता है कि वह वृक्षारोपण कर आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए जल का संचय करके रखें, अन्यथा आगे आने वाली पीढ़ी क्यो सोचेगी? वर्तमान पीढ़ी का यह कर्तव्य बनता है कि पानी को बचाए, पर्यावरण संतुलित रखें और वृक्षारोपण कार्यक्रम को हाथ में लें। उन्होंने कहा कि वृक्ष लगेंगे, तो वर्षा होगी और पानी का जलस्तर भी ऊंचा आएगा। गहलोत ने हरा-भरा राजस्थान बनाने तथा पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रदेश के हर गांव-ढ़ाणी के परिवारों को वृक्ष लगाने का कार्य हाथ में लेने की अपील की और कहा कि मानसून का मिजाज बदल रहा है और पिछले 60-62 वर्षों में से राज्य में अधिकांश वर्षों में सूखा और अकाल की स्थिति रही है। राजस्थान के 237 ब्लॉकों में से अब केवल 30 ब्लॉक बचे हैं, जहां पानी सुरक्षित है।

राजस्थान का क्षेत्रफल पूरे देश का 10 प्रतिशत है और जल की उलब्धता मात्र एक प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि हम जमीन से पानी लगातार खींच रहे हैं और वृक्षों की कटाई से वन नष्ट हो रहे हैं। गहलोत ने कहा कि नरेगा एक शानदार योजना है। राजस्थान पहला ऐसा राज्य है जिसने इस योजना के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम को जोड़ा है। पेयजल की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पानी के ज्यादा निकालने से इसकी गुणवत्ता खराब होती जा रही है और कई प्रकार की बीमारियां युवा वर्ग में फैलती जा रही है, जो चिंता का विषय है। गहलोत ने कहा कि खेत का पानी खेत में, घर का पानी घर में रखकर पानी बचाने की प्रवृत्ति को हमें बढ़ावा देना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि कई राज्यों ने पानी बचाने के लिए कानून भी बनाए हैं। पानी और बिजली की सुविधा देना सरकार का फर्ज है परन्तु जनता का भी यह दायित्व बनता है कि राज्य के भविष्य को देखते हुए राज्यहित में पेड़ लगा दिए जाए तो ये एक बड़ा काम होगा। पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के लिए 44 हजार वर्ग किलोमीटर अतिरिक्त क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण करना होगा।

इस अवसर पर केन्द्रीय भूतल एवं परिवहन राज्य मंत्री श्री महादेव सिंह खण्डेला ने लोगों से पानी बचाओ, बिजली बचाओ, सबको पढ़ाओ के साथ हरा-भरा राजस्थान बनाने का संकल्प दोहराया। वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री रामलाल जाट ने समारोह की अध्यक्षता की । अपने अध्यक्षीय संबोधन में

बाकी पेज 6 पर....

समारोह स्थल पर मंचासीन अतिथिगण।

विशिष्ठ अतिथियों द्वारा फोल्डर का विमोचन।

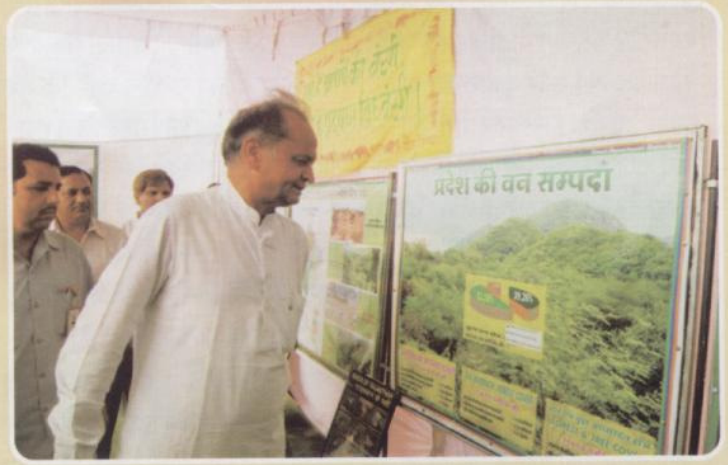

वन प्रदर्शनी का अवलोकन करते श्री गहलोत।

मंच पर शुभकामनायें लेते हुए मुख्यमंत्री।

पौधारोपण करते हुए मुख्यमंत्री।

पौधारोपण करते हुए श्रीमती सुनीता गहलोत।

वन महोत्सव समारोह में मुख्यमंत्री द्वारा संस्थाओं एवं वनकर्मियों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

पेज 3 का शेष....

वानिकी पुरस्कार प्रदान किये

राज्य स्तरीय वन महोत्सव समारोह में निम्न व्यक्तियों एवं संस्थाओं को राज्य स्तरीय वानिकी पुरस्कार प्रदान किये गये।

• **अमृतादेवी विश्नोई स्मृति पुरस्कार वर्ष 2008**	वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति, करेल, रेंज फलासिया, वन मण्डल उदयपुर (मध्य)	रु. 50, 000 एवं प्रशास्ति पत्र
• **सर्वोत्तम वन प्रहरी पुरस्कार**	**श्री महावीर शर्मा,** अध्यक्ष वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति, कुकडेला, उप वन संरक्षक, जयपुर (उत्तर)	रु. 1,000 एवं प्रशास्ति पत्र
• **सर्वोत्तम वन रक्षक पुरस्कार**	**श्री मोहम्मद इकबाल,** वन रक्षक, नाका डूंगरपुर, रेंज डूंगरपुर	रु. 1,000 एवं प्रशास्ति पत्र
	श्री रणधीर सिंह, रेंज 61 के.वाई.डी. वनमण्डल छत्तरगढ़	रु. 1,000 एवं प्रशास्ति पत्र
	श्री रामपाल शर्मा, वन रक्षक, उप वन संरक्षक, जयपुर (मध्य)	रु. 1,000 एवं प्रशास्ति पत्र
• **सर्वोत्तम वन पालक**	**श्री दारासिंह राणावत,** वनपाल, नाका दाणीतलाई, रेंज बस्सी, वनमण्डल प्रतापगढ़	रु. 1,000 एवं प्रशास्ति पत्र
	श्री हनुमान विश्नाई, वनपाल रेंज बैरियावाली, वनमण्डल छत्तरगढ़	रु. 1,000 एवं प्रशास्ति पत्र
• **सर्वोत्तम क्षेत्रीय**	**श्री बहादुर सिंह राठौड़,** क्षेत्रीय वन अधिकारी रेंज गढ़ी, वनमण्डल बांसवाड़ा	रु. 1,000 एवं प्रशास्ति पत्र
	श्री रघुवीर सिंह ढाका, क्षेत्रीय वन अधिकारी ग्रेड द्वितीय, उप वन संरक्षक, विश्व खाद्य कार्यक्रम, जैसलमेर	रु. 1,000 एवं प्रशास्ति पत्र
• **सर्वोत्तम वानिकी लेखन एवं अनुसंधान**	**श्री ओम प्रकाश शर्मा,** मुख्य लेखाधिकारी एवं आंतरिक वित्त सलाहकार, कार्यायल महाप्रबंधक, भारत संचार निगम लि. बीकानेर	रु. 2,000 एवं प्रशास्ति पत्र

उन्होंने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण ने पूरी मानव जाति को ग्रसित कर रखा है। समय रहते यदि हम नहीं चेते तो हमारी भावी पीढ़ियां हमें कभी माफ नहीं करेगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि अब वह समय आ गया है कि हमें किसी भी उत्सव, विशेष दिन, जन्म दिन, पुण्यतिथि आदि की शुरुआत पेड़ लगाकर ही करनी चाहिए। समारोह में विधायक भगवान सहाय सैनी ने भी लोगों से ग्रामीण अंचलों में हरियाली बचाने की अपील की।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर वन विकास संरक्षण में उत्कृष्ट कार्य करने वाली वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति को 50 हजार रुपये का वर्ष 2008 का 'अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार' वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति, करैल, रैंज, फलासीया वन मंडल, उदयपुर (मध्य) को प्रदान किया।

समारोह में मुख्यमंत्री, वन मंत्री तथा परिवहन मंत्री, बृज किशार शर्मा ने वन विभाग तथा ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग द्वारा प्रकाशित 'हरित राजस्थान' एवं 'कार्यक्रम निर्देशिका' पुस्तिकाओं का विमोचन किया।

कार्यक्रम में पूर्व उप मुख्यमंत्री श्रीमती कमला, सांसद लालचन्द कटारिया, विधायक भगवान सहाय सैनी, जिला प्रमुख रामगोपाल गार्ड, विधायक गोपाल लाल मीणा, पूर्व विधायक रामचन्द्र सराधना, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अभिजित घोष, पूर्व विधायक तेजपाल, ढोढसर सरपंच तीजा देवी आदि भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का विधायक भगवान सहाय सैनी ने सूत की माला भेंटकर स्वागत किया। इसी प्रकार सुनीता गहलोत का तीजादेवी, केन्द्रीय मंत्री महादेव सिंह खण्डेला का छीतरमल जलुथरिया, वन राज्यमंत्री रामलाल जाट का अध्यक्ष महावीर प्रसाद केकरेला, राज्य परिवहन मंत्री बृजकिशोर का हरदेव, लालचन्द कटारिया का किशनलाल, जिला प्रमुख रामगोपाल गार्ड का कैलाश यादव, उप मुख्यमंत्री कमला देवी का लालाराम बलेसरा, रामचन्द्र सराधना का देवन्दा, गोपाललाल मीणा का छीतरमल गौरावा ने माला पहनाकर स्वागत किया। समारोह स्थल पर वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी गण, अन्य वन कर्मी और हजारों ग्रामीण स्त्री-पुरुष उपस्थित थे।

वृक्षारोपण के लिए केन्द्र से 17 हजार करोड़ मांगे

वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री रामलाल जाट ने राज्य के लगभग 44 हजार वर्ग कि.मी. क्षेत्र में वृक्षारोपण हेतु भारत सरकार से 17 हजार करोड़ रुपए की मांग की है। उन्होंने विभिन्न परियोजनाओं में वृक्षारोपण के लिए राष्ट्रीय वनीकरण योजना के तहत भी वन विकास अभिकरणों के लिए राजस्थान को अधिक से अधिक राशि उपलब्ध कराए जाने का आग्रह किया है। नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित राज्यों के वन एवं पर्यावरण मंत्रियों की बैठक में जाट ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता राज्य में बेहतर पारिस्थितिकी तंत्र की स्थापना करना है।

वन संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत आवासीय प्रयोजन हेतु कच्ची बस्तियों के नियमन के लिए वन भूमि प्रत्यावर्तन के लिए वन संरक्षण अधिनियम, 1980 में वर्तमान में प्रावधान हेतु केन्द्र सरकार द्वारा समुचित शर्तों के अध्याधीन ऐसे वन क्षेत्र को प्रत्यावर्तित करने के संबंध में सरलीकृत प्रक्रिया निर्धारित की जानी चाहिए। उन्होंने भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को डाइवर्जन की स्वीकृति देते समय वृक्षारोपण की आवश्यकता अनुसार समस्त राष्ट्रीय राजमार्गों के दोनों तरफ कम से कम तीन-तीन कतारों में सघन वृक्षारोपण करने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण पर बाध्यकारी शर्तें लगाने का प्रावधान किए जाने हेतु भी जोर दिया।

जाट ने कहा कि भारत सरकार द्वारा संरक्षित क्षेत्रों की वार्षिक कार्य योजनाएं अनुमोदन के पश्चात् राशि उपलब्ध होने में साधारणतया प्रतिवर्ष अगस्त-सितम्बर का समय आ जाता है। ऐसी स्थिति में अप्रेल से जून की अवधि में वन्य जीवों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था एवं अग्नि दुर्घटनाओं से निपटने के लिए राशि के अभाव में कठिनाई महसूस की जाती है।

वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में खरपतवार हटाने में भी इससे विलम्ब और व्यवधान होता है। अतः भारत सरकार को पूर्व वर्ष की वार्षिक कार्य योजना की कम से कम 25 प्रतिशत राशि के बराबर राशि माह अप्रैल में ही आवंटित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इससे वार्षिक कार्य योजना की पूर्ण राशि का उपयोग भी सम्भव हो सकेगा। वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री ने संरक्षित क्षेत्रों एवं वन्य जीव बहुल क्षेत्रों के आसपास जंगली सूअरों, हिरणों एवं अन्य वन्य जीवों द्वारा कृषकों को फसलों को भारी नुकसान पहुंचाए जाने की चर्चा करते हुए कहा कि इस हेतु कृषकों को समुचित मुआवजे का प्रावधान किये जाने चाहिए।

उन्होंने संरक्षित क्षेत्रों में शिकारियों से लड़ने के लिए फ्रन्टलाईन स्टाफ के आधुनिकीकरण हेतु भी अतिरिक्त वित्तीय राशि उपलब्ध कराने की मांग रखी। बैठक में वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रमुख शासन सचिव बी.एल. आर्य, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अभिजीत घोष ने भी भाग लिया।

जयपुर में 16 अगस्त, 09 को भारत सेवा संस्थान की ओर से स्वच्छ एवं हरा–भरा जयपुर पर एक विचार गोष्ठी का सहकारिता भवन के सभागार में आयोजन किया गया। जिसमें राजधानी के सैकड़ों पर्यावरण प्रेमियों, विभिन्न विभागों से जुड़े अधिकारियों, स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों, पत्रकारों, व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों एवं पर्यावरण विशेषज्ञों ने भाग लिया।

गोष्ठी को पर्यावरण विद सुन्दरलाल बहुगुणा ने संबोधित करते हुए कहा कि आज हमें अपने जीने के लिए पेड़ लगाने होंगे। उन्होंने कहा कि पेड़ लगाने से तात्पर्य यह है कि हम स्वच्छ प्राणवायु प्राप्त करने के लिए कार्य कर रहे हैं। हम जलवायु परिवर्तन के खतरे से मुकाबले की तैयारी कर रहे हैं। हमें यह कार्य भावी पीढ़ी को खुशहाल जीवन के लिए करना होगा।

गोष्ठी में वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री रामलाल जाट ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरण असंतुलन की वैश्विक समस्या उत्पन्न हो गई है और मानव जीवन पर ही नहीं अपितु वनों व वन्य जीवों पर भी भारी संकट पैदा हो गया है। इन सभी तथ्यों के मद्देनजर राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की पहल पर हरित राजस्थान हरित राजस्थान अभियान की शुरूआत की गई है।

कार्यक्रम को गिरधारी लाल बाफना तथा राजीव अरोडा आदि ने भी संबोधित किया। गोष्ठी में जयपुर को अधिकाधिक हरा–भरा बनाने के उपायों पर चर्चा की गई।

जिसका पेड़ ज्यादा बड़ा उसी को नकद इनाम

हरित राजस्थान अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक अशोक नरूका की घोषणा

पुलिस अधीक्षक, जयपुर (उत्तर) अशोक नरूका ने हरित राजस्थान अभियान के तहत पौधरोपण के दौरान घोषणा की कि जिस पुलिसकर्मी का पेड़ ज्यादा मोटा तथा बड़ा होगा, उसे उतना ही ज्यादा नकद इनाम मिलेगा।

उन्होंने कहा कि पुलिस कर्मियों द्वारा रोपित पौधों का छह माह बाद निरीक्षण किया जाएगा।

इनाम की राशि पेड़ की मोटाई तथा लंबाई के आधार पर तय की जाएगी। यह कितनी भी हो सकती है।

अनुरोध :

वानिकी समाचार में प्रकाशनार्थ आलेख, छायाचित्र, विभागीय गतिविधियों की जानकारी, साझा वन प्रबन्ध की सफल कहानियां, कविताएं तथा अन्य सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। यह सामग्री ई-मेल से भी भेजी जा सकती है।

इस पत्रिका के अंक वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं।

– सम्पादक

Book-Post

वन विभाग, राजस्थान के लिए उप वन संरक्षक, वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर द्वारा प्रकाशित एवं प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड, जयपुर से मुद्रित। 2009/3000
संरक्षक : अभिजीत घोष; संपादक : यू.एम. सहाय; सहायक सम्पादक : सूरज जिद्दी
Website : www.rajforest.nic.in • E-mail : vanikisamachar@yahoo.com